श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेंद्र छंद)

श्री सुपार्श्व प्रभु के चरणों में, पूजन करने आया।
चिद्भावों को विशुद्ध करके, कर्म नशाने आया।।
दर्श किया तो लगा मुझे यों, सिद्धालय को पाया।
हृदय कमल में बस जाओ प्रभु, भक्ति सुमन ले आया।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(स्रग्विणी छंद)

जन्म और मृत्यु का रोग भारी प्रभो ।
सब मिटा दो अहो दुःखहारी विभो।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
जन्म का नाश निश्चित करूँगा विभो।।1।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म आताप से नाथ जर्जर हुआ।
शांति मुझको मिली जब से दर्श हुआ।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
भव का संताप नाश करूँ विभो।।2।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
जे पाया अभी तक वो नाश हुआ।
आपको देख शाश्वत का भान हुआ।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
पद अक्षय को निश्चित वरूँगा विभो।।3।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
भा रही थी मुझे काम बंध कथा।
आपके दर्श से भा रही आतमा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
शुद्ध आतम का दर्श करूँगा विभो।।4।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
भूख व्याधि मुझे नाथ तड़पा रही।
तृष्णा नागिन प्रभु जो डँसी जा रही।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अक्ष मन के विषय को तजूँगा विभो।।5।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोह माया का तूफान भटका रहा।
ज्ञान नभ में घना मेघ मंडरा रहा।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
आप सम पूर्णज्ञानी बनूँगा विभो।।6।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म बंधन की कारा में कब से पड़ा।

नाथ मुझको छुड़ा लो मैं दर पे खड़ा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अष्टकर्मों का नाश करूँगा विभो।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
यूँ ही जीवन गंवाया है निष्फल रहा।
राग-द्वेष ने लूटा है उपवन महा।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
मोक्ष लक्ष्मी का स्वामी बनूँगा विभो।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आप ही मोक्षलक्ष्मी के स्वामी महा।
भव से तारो मुझे मैं व्यथित हूँ यहाँ।।
आज भावों से पूजा करूँगा प्रभो।
अर्चना से जिनेश्वर बनूँगा विभो।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
पंचकल्याणक
(स्रग्विणी छंद)
भाद्र शुक्ला की षष्ठी मनोहर अति।
गर्भ में आ गये तीन जग के पति।।
स्वप्न को देख माँ पृथ्वी हरषा गई।
जय सुपार्श्व प्रभो देवियाँ कह रही।।1।।
ऊँ हीं भाद्रशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म वाराणसी में प्रभु ने लिया।
सुप्रतिष्ठ के गृह को पवित्र किया।।
ज्येष्ठ शुक्ला की बारस तिथि गई।
सर्व आनंद की ही छटा छा गई।।2।।
ऊँ हीं ज्येष्ठशुक्लोद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जन्म उत्सव ही दीक्षा में बदला तभी।
राग पथ त्याग वैराग्य धारा तभी।।
रूप हैं निर्विकारी महाव्रत धरें।
श्री सुपार्श्व प्रभुजी की जय-जय करें।।3।।
ऊँ हीं ज्येष्ठशुक्लोद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कृष्ण फाल्गुन की षष्ठी तिथि आ गई।
नाशे चउ घातिया निज निधि मिल गई।।
हुई रचना समोसर्ण की सुखकरी।
ध्वनि सुपार्श्व प्रभुवर की है हितकरी।।4।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सप्तमी कृष्ण फाल्गुन की जब आ गई।
वसु विधि नाशकर शिवरमा मिल गई।।
मोक्ष का धाम कूट प्रभास रहा।
दर्श कर पा रहे यात्री शांति महा।।5।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य
ऊँ हीं अर्हं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(ज्ञानोदय छंद)

जय सुपार्श्वसप्तम तीर्थंकर, दीनानाथ कहाते हो।
ळम अज्ञानी रागी-द्वेषी, तुम जगनाथ कहाते हो।।
स्वस्तिक चिह्नित पद कमलों में, करते वंदन बारम्बार।
श्री सुपार्श्व जिनराज हमारे, करते हैं भविजन को पार।।1।।
कहूँ नाथ क्या आज आपसे, मैं दुखिया भववासी हूँ ।
तेरी अनुपम करुणा का ही, नाथ हुआ अभिलाषी हूँ ।।
आज आपकी महिमा सुनकर, आया हूँ श्री चरणों में।
कृपा आपकी हो जाये तो, लीन रहूँगा चरणों में।2।।
नहीं सुनोगे मेरी अरजी, और कहाँ मैं जाऊँगा।
अन्य आपसा सच्चा भगवन्, और कहाँ मैं पाऊँगा।।
भटक रहा हूँ भव-वन में, सन्मार्ग मुझे अब दे देना।
कौन सुनेगा जग में मेरी, नाथ मुझे अपना लेना।।3।।
बहुविध उपसर्गों को सहकर, जगत पूज्य अरहंत हुये।
ऊध्र्व मध्य औ अधोलोक से, प्रभु आप जगवंद्य हुये।।
पंचानवे गणधर प्रभु के थे, मीनार्या थी प्रमुख महान।
बारह कोठे में श्रोतागण, सुन वाणी करते कल्याण।।4।।
अरहंत पद पाकर प्रभु ने, सप्त तत्त्व उपदेश दिया।
राग-द्वेष से भव बढ़ता है, जीवों को संदेश दिया।।
श्रीसुपार्श्व जिनवर को पूजूँ, नित्य उन्हीं का ध्यान करूँ।
श्रागादिक का नाश करूँ मैं, मक्तिवधू अविराम वरूँ।।5।।
जिसने भी तव चरण धूल को, अपने शीश चढ़ाया है।
महा भयानक भव सागर से, उसको पार लगाया है।।
तेरे उद्धारक चरणों पर,नाथ मेरी बलिहारी है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, ''पूर्ण'' ज्ञान के धारी हैं ।।6।।

दोहा

यद्यपि दोष का कोष हूँ, अज्ञानी हूँ नाथ।
फिर भी भक्ति प्रबल है, चरण नमाऊँ माथ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

हेसुपार्श्व स्वामी, अंतर्यामी, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।